गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत...

2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
2 दिसम्बर से
8 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA

Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

इस अंक में हमने हिन्दू संस्कृति के मांगलिक प्रतिक चिन्हों में से एक स्वस्तिक के विषय में विभिन्न जानकारी से पाठको का ज्ञान बढ़ाने का प्रयास किया हैं। स्वस्तिक संस्कृत भाषा का शब्द है। स्वस्तिक का सरल शब्दों में अर्थ शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला है। स्वस्तिक शब्द मूल रुप से सु + अस से बना है। सु का शाब्दिक अर्थ है शुभ, अच्छा, कल्याणकारी, मंगलकारी। अस का शाब्दिक अर्थ है अस्तित्व, सत्ता। दोनो शब्दों के संयोज से बना हैं, स्वस्तिक अर्थात शुभ, कल्याणकारी या मंगलकारी की सत्ता एवं उसका प्रतिकात्मक रुप। स्वस्तिक व्यावहारिक रुप से हमारी पूर्णतः कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। धर्मशास्त्रों में स्वस्तिक को देवी-देवता की शक्ति के प्रतीक रुप में शुभ एवं कल्याणकारी माना गया है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में स्वस्तिक का वर्णन आशीर्वाद युक्त, मंगलकारी या पुण्यकारी के रुप में किया गया लिखा है, स्वस्तिक के प्रतिक चिन्ह में सभी दिशाओं में सकल लोक का कल्याण अर्थात सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना समाहित हैं।

स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा:।

स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

अर्थात: महान कीर्ति वाले इन्द्रदेव हमारा कल्याण करो, विश्व के ज्ञानस्वरूप पूषादेव (सूर्यदेव) हमारा कल्याण करो। जिसका शस्त्र अटूट है ऐसे गरूड़ भगवान हमारा मंगल करो। बृहस्पतिदेव हमारा मंगल करो।

हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व उक्त मंत्र को निर्मित किया था। समग्र ब्रहमांड में व्याप्त ब्रहम के विराट स्वरुप को संक्षिप्त में अंकित करने का भावार्थ स्वस्तिक में निहित है, स्वस्तिक की खड़ी और आड़ी रेखा स्पष्ट रूप से यह बात को दर्शाती हैं। स्वस्तिक की खड़ी रेखा ज्योतिर्लिंग को और आड़ी रेखा विश्व का विस्तार दर्शाती है। स्वस्तिक की चार भुजाएँ भगवान विष्णु के चार हाथ को दर्शाते है, जो चारों दिशाओं का पालन करते है। स्वस्तिक हिन्दू धर्म में अति प्राचीन प्रतीक है। जो देवताओं की शक्ति एवं मनुष्य की मंगलमय कामनाएँ दोनों कें संयोजन को दर्शाता है। स्वस्तिक मनुष्य के लिए सर्वांगी मंगलमय भावना का प्रतीक है।

हमने आधुनिक युग में नई खोज-अनुसंधान व अनुभवों के आधार पर विद्वानों के अनुभव को संकलित करने का प्रयास किया हैं, जिस्से उचित परामर्श से विभिन्न पदर्थ से स्वस्तिक का निर्माण करने पर सरलता से विभिन्न लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं। स्वस्तिक के उचित प्रयोग से आप भी धनवृद्धि, सुख-शान्ति, उच्च पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, कार्य में सफलता, स्वास्थ्य लाभ, वास्तुदोष निवारण, गृहक्लेश निवारण, शत्रु भय से रक्षण कर सकते है।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा

आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं…

चिंतन जोशी
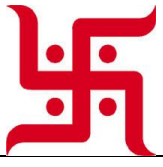
***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

स्वस्तिक का धार्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

स्वस्तिक संस्कृत भाषा का शब्द है।

स्वस्तिक का सरल शब्दों में अर्थ शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला है। स्वस्तिक शब्द मूल रुप से सु + अस से बना है।

सु का शाब्दिक अर्थ है शुभ, अच्छा, कल्याणकारी, मंगलकारी। अस का शाब्दिक अर्थ है अस्तित्व, सत्ता।

दोनो शब्दों के संयोज से बना हैं, स्वस्तिक अर्थात शुभ, कल्याणकारी या मंगलकारी की सत्ता एवं उसका प्रतिकात्मक रुप।

स्वस्तिक व्यावहारिक रुप से हमारी पूर्णतः कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। धर्मशास्त्रों में स्वस्तिक को देवी-देवता की शक्ति के प्रतीक रुप में शुभ एवं कल्याणकारी माना गया है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में स्वस्तिक का वर्णन आशीर्वाद युक्त, मंगलकारी या पुण्यकारी के रुप में किया गया लिखा है, स्वस्तिक के प्रतिक चिन्ह में सभी दिशाओं में सकल लोक का कल्याण अर्थात सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना समाहित हैं।

मंगलकारी प्रतीक स्वस्तिक हिन्दू धर्म के अत्यंत पवित्र एवं शुभ धार्मिक प्रतीक चिन्हों में से एक है। अभी तक प्राप्त प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से विभिन्न प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं, पुरातन काल से ही हिन्दू संस्कृति के अलावा अन्य अनेक संस्कृति में भी स्वस्तिक अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा हैं।स्वस्तिक का चिन्ह अपने आप में विलक्षण है, जो सृष्टि के अनेक गृढ़ रहस्यों से युक्त है।

विद्वानों का मत हैं की पौराणिक काल में हिन्दू संस्कृति में किसी भी शुभ कार्य या मंगल कार्य को आरंभ करने से पूर्व मंगलाचरण लिखने की परंपरा प्रचलित थी। लेकिन कालांतर में विद्वान ऋषि-मुनियों ने अनुभव किया की हर व्यक्ति के लिए किसी शुभ कार्य अथवा मांगलिक कार्य के आरंभ में विधि-विधान से मंगलाचरण लिखना सम्भव नहीं हैं, तब गहन चिंतन-अध्ययन से संभवत् शुभकार्यों का शुभारंभ सरलता से करने के उद्देश्य से स्वस्तिक चिन्ह का आविष्कार किया होगा!

पौराणिक धर्मग्रंथों के अनुसार हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हज़ारों वर्ष पूर्व ही स्वस्तिक की आकृति को निर्मित कर, उसमें छुपे गृढ़ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था।

मुख्यतः स्वस्तिक का निर्माण छह रेखाओं से होता है। स्वस्तिक बनाने के लिए धन (+) चिन्ह अर्थात दो सीधी रेखाएँ रेखाएं जो एक दूसरी को काटती हैं, उसकी चारों भुजाओं के कोने से समकोण बनाने वाली एक रेखा दाहिनी (दक्षिणवर्ती) ओर खींचने से स्वस्तिक बनता है। दक्षिणवर्ती में रेखाएँ हमारे दायीं ओर मुड़ती (दक्षिणवर्त्ती / घडी की सूई चलने की दिशा) हो, उसे दक्षिणावर्त स्वस्तिक कहते हैं। वामावर्त्ती में रेखाएँ पीछे की ओर मुड़ती हुई हमारी बायीं ओर (वामावर्त्ती/घडी की सूई चलने की दिशा से उलटी) हो, उसे वामावर्त स्वस्तिक कहते हैं। दक्षिणवर्त्ती एव वामावर्त्ती स्वस्तिक स्त्री एवं पुरुष के प्रतीक के रूप में माना जाता हैं।

हिन्दू संस्कृति में स्वस्तिक प्रबल रुप से दक्षिणवर्त्ती ही प्रयुक्त रहा हैं। क्योकिं, दायीं ओर मुडी भुजा वाला स्वस्तिक शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक हैं, लेकिन कुछ अपवाद अथवा विशेष परीस्थिति या विशेष संस्कृति या परंपराओं में वामावर्त्ती अर्थात उल्टा स्वस्तिक भी प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन, जानकारों का
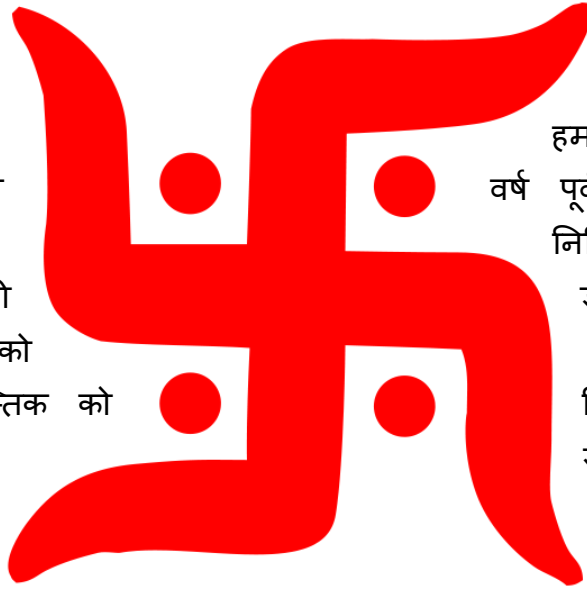
मत हैं की उल्टा स्वस्तिक (वामावर्ती) विशेष शुभकारी नहीं होता, अपितु यह अमांगलिक, हानिकारक हो सकता हैं। अतः एसे स्वस्तिक का चित्रांकन केवल विशेष परिस्थियों में अल्प समय के लिए हि करना चाहिए हैं।^

^(नोटः हालाकिं इसमें अनेक मत-मतांतर रहें हैं, क्योकिं कुछ संप्रदाय या संस्कृतिमें उल्टा स्वस्तिक (वामावर्ती) भी शुभकारी माना जाता रहा है। इसी लिए विभिन्न संस्कृतियों में सकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोत एवं मंगल चिन्हों के रुप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है।)

हिन्दू धर्मग्रंथों में भगवान शिव-शक्ति के रुप में ज्योतिर्लिंग को विश्व की उत्पत्ति का मूल माना है। इस विषय पर विद्वानों का गहन अध्ययन एवं चिंतन रहा हैं की जिस प्रकार दाहिना स्वस्तिक नर का प्रतीक है और बायाँ नारी का प्रतीक हैं। उसी प्रकार स्वस्तिक की खडी रेखा सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक है और आडी रेखा सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है। स्वस्तिक के मध्य बिंदु को भगवान विष्णु का नाभि कमल भी माना जाता है, जहाँ से विश्व की उत्पत्ति मानी गई है। स्वस्तिक में प्रयुक्त होने वाले 4 बिन्दुओ को 4 दिशाओं का प्रतीक माना गया है। कुछ विद्वान इसे 4 वर्णों की एकता का प्रतीक मानते हैं, तो कुछ विद्वान इसे ब्रह्माण्ड का प्रतीक मानते हैं। क्योकि, स्वस्तिक के चारों सिरों पर खींची गयी रेखाएं किसी बिंदु को इसलिए स्पर्श नहीं करतीं, क्योंकि इन्हें ब्रहाण्ड के प्रतीक स्वरूप अन्तहीन दर्शाया गया है।

वेदों में स्वस्तिक के महत्व का उल्लेख विभिन्न अर्थों मिलता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक चिन्ह को गणेश, विष्णु, सूर्य, सृष्टिचक्र तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना गया है। इसकी आकृति में चार बिंदु इको गौरी, पृथ्वी, (कूर्म) कछुआ और अनन्त देवताओं का वास माना जाता है। कुछ विद्वानों ने स्वस्तिक को भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र का स्वरुप माना है। जिसमें मनुष्य की शक्ति, प्रगति, प्रेरणा का उद्देश्य निहित है।

ऋग्वेद के अनुसार स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक है, और स्वस्तिक की चार भुजाएं चार दिशाओं को दर्शाती है। सूर्य समस्त इश्वरीय शक्तियों का केंद्र बिंदु है, जो सकल लोक में जीवन दाता माना गया है। स्वस्तिक को सूर्य का स्वरुप मान कर प्रयुक्त करने पर निरंतर शक्ति प्राप्त होती हैं। स्वस्तिक को ऋग्वेद में सूर्य मनोवांछित फलदाता सम्पूर्ण जगत का कल्याण करने वाला और देवताओं को अमरत्व प्रदान करने वाला माना गया है। वायवीय संहिता में स्वस्तिक को ब्रह्मा का ही एक स्वरूप माना है, जो आठ यौगिक आसनों में एक है।

कुछ विद्वान स्वस्तिक की चार भुजाओं को हिन्दू धर्मग्रंथों मे वर्णित चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) का प्रतिक, चार युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग) का प्रतिक, चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्न्यास) का प्रतिक, चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का प्रतिक, चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) की एकता का प्रतीक मानते हैं। इन भुजाओं को ब्रह्मा के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप भी माना जाता है।

जिस प्रकार सभी मांगलिक और शुभ कार्यों में सर्वप्रथम श्री गणेश का पूजन किया जाता है। उसी प्रकार सभी मांगलिक कार्य, शुभ कार्यों इत्यादि में स्वतिस्क के चिन्ह का निर्माण किया जाता है। किसी भी शुभ कार्य-क्रम, व्रत, पर्व, त्योहार, पूजा-अर्चना में घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि की दिवारों पर, पूजन की थाली, बाजोट इत्यादि पर हल्दी, कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं। इस के पीछे का मुख्य उदेश्य हमारे आसपास से नकारात्मक ऊर्जा दूर करना होता है, क्योकि स्वस्तिक को सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करने के पीछे अन्य उद्देश्य होता हैं, जिससे अपने आराध्य से यह प्राथना कि जाती हैं, कि हमारे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो। हमारे घर में सुख-शांति-समृद्धि बनी रहे।

स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना वास्तु के अनुसार भी लाभदायक सिद्ध होता है इसलिए घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि के प्रवेश द्वार के उपर या दोनों ओर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं,
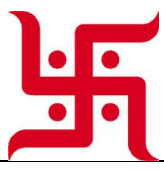
मान्यता हैं कि इससे बुरी नज़र से रक्षा होती हैं और और घर के वातावरण से नकारात्मक उर्जा दूर होती और निरंतर सकारात्मक उर्जा का संचार होता है।

कैश बॉक्स, तिज़ोरी, अलमारी इत्यादि धन रखने के स्थान पर भी स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना अत्यंत शुभ होता हैं, मान्यता हैं की इससे धन की सुरक्षा और वृद्धि होती हैं, और अशुभ शक्ति से रक्षण होता है।

स्वस्तिक को धनकी देवी लक्ष्मी और बुद्धि के देवता गणेश जी का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक के चिन्ह को चारों दिशाओं के अधिपति देवता क्रमशः अग्नि, इन्द्र, वरुण और सोम के पूजन हेतु एवं अन्य देवी-देवता के आशीर्वाद को प्राप्त करने हेतु प्रयोग किया जाता है। स्वस्तिक का चिन्ह केवल शुभ स्थानों पर ही करना चाहिए, शौचालय जैसे अशुभ स्थान पर बनाने या लगाने से बचना चाहिए, अन्यथा प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

अन्य संस्कृति में स्वस्तिक
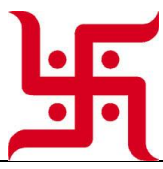
- स्वस्तिक को ग्रीक में पूर्वकाल में गम्माडिओन (gammadion) गम्माडिओन (tetragammadion) के नाम से जाना जाता था।
- स्वस्तिक को जर्मन में हकेन्क्रुज़ या हकेनक्रेउज़ या हुकड क्रॉस (Hakenkreuz), क्रुमक्रेज़ या क्रुक्ड क्रॉस(Krummkreuz) के नाम से जाना जाता है।
- पुरातन समय से मुख्य रूप से फाईलफॉट (fylfot) में हेराल्ड्री (Heraldry) अर्थात कलात्मक रचनाएं, प्रदर्शन, रक्षक ढाल या हथियार झंडे और प्रतीकात्मकता संबंधित विषयों का अध्ययन करने की विद्या में और वास्तुकला में प्रयुक्त किया जाता था।
- मूल अमेरिकी लोगों के ऐतिहासिक संदर्भ की आयोनोग्राफी में इसे घुमावदार लॉग (Whirling Log) के रुप में पाया गया है, जिसे समृद्धि, उपचार और भाग्य की अधिकता को दर्शाया गया था।
- चीन में स्वस्तिक को एक वान(wàn) के नाम से एक विशेष संकेत के रुप में अपनाया गया है। चीन में स्वास्तिका जैसे प्रतीकों का उल्लेख नियोलिथिक स्क्रिप्ट (Neolithic scripts) में पुरातन काल के धर्म ग्रंथों में वर्णित रहा है। पुरातन काल से ही चीन की लेखन प्रणाली में 卍 और 卐) के बाएं और दाएं हाथ वाले स्वस्तिक का चिन्ह प्रचलित रहा है। चीन, जापान और कोरिया में स्वास्तिका को आमतौर पर पूर्ण सृजन का प्रतिक दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है, चीन में तांग राजवंश (Tang dynasty) के दौरान, महारानी वू ज़ेटियन (Wu Zetian) ने आदेश जारी किया था कि स्वास्तिका को सूर्य के वैकल्पिक प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया जाएगा।
- जापानी में स्वस्तिक के प्रतीक को मांजी (Manji) कहा जाता है।
- रेने गुएनॉन (Rene Guenon) के अनुसार, स्वास्तिक पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके आसपास की हर चिज घुमनेवाली अर्थात गतिमान हैं लेकिन वह एक केंद्र अर्थात अचल धुरी पर स्थिर होता हैं। जैसा कि यह जीवन का प्रतीक है। ब्रह्मांड के सिद्धांत में यह पूर्ण भगवान के रुप को सजीव करने वाला सर्वोच्च सिद्धांत हैं। स्वस्तिक यह विश्व के निर्माण में ब्रहमांड के सिद्धांत की गतिविधि का प्रतिनिधित्व करता है। रेने गुएनॉन के अनुसार, स्वास्तिका अपने बुनियादी मूल्य में चीनी परंपरा के यिन और यांग प्रतीक का प्रतिक है।

जैन धर्म में स्वस्तिक

- हिन्दू धर्म की तरह ही जैन धर्म में भी स्वस्तिक को अत्यंत मांगलिक प्रतीक माना जाता हैं। क्योकि, स्वस्तिक में मंगलकामना का भाव समाहित होता हैं। विद्वानों का मत हैं की स्वस्तिक की उत्पत्ति ऋग्वेद से भी प्राचीन हैं।

- जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकरों के मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक विशेष चिह्न है। चौबीस तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर भगवान् श्री सुपार्श्वनाथजी का मांगलिक चिह्न स्वस्तिक है। जैन धर्म के 8 मांगलिक मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक मांगलिक चिन्ह माना गया हैं।
- जैन धर्म में सभी प्रकार के पूजन-अर्चन आदि में स्वस्तिक का प्रयोग को विशेश रुप से किया जाता हैं।
- जैन धर्म में किसी भी मांगलिक कार्य के शुभारंभ में हलदी, केसर, चंदन, चावल इत्यादि से स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर भगवान से अपने मंगल एवं कल्याण की कामना की जाती है।
- प्रायः सभी जैन पवित्र पुस्तकों और मंदिरों में प्रमुख व्रत-पर्व-त्यौहरों में आमतौर पर वेदी/ चौकी पर चावल से स्वास्तिका चिन्ह बनाने के साथ प्रारंभ होता है।
- जैन धर्म में 24 तीर्थंकर के सम्मुख चावल से स्वास्तिका बना के उस पर बादाम, फल, एक मीठे बतासे(पतासा) इत्यादि या सिक्के/नोट इत्यादि रख कर अर्पण किया जाता है।
- जैन धर्म में स्वास्तिक की चार भुजाएं चार स्थानों का प्रतीक मानी हैं, जो आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से पुनर्जन्म ले सकती है, उस आत्मा के मोक्ष प्राप्ति के पहले जन्म और मृत्यु के चक्र को समाप्त कर उससे सर्वज्ञता प्राप्त की जा सकती हैं।

बौद्ध धर्म में स्वस्तिक

- बौद्ध धर्म में भी स्वस्तिक चिह्न अत्याधिक शुभ माना जाता है। भगवान् बुद्ध के मांगलिक चिन्ह में स्वस्तिक का विशेष महत्त्व है। बौद्ध स्तूपों-विहारों इत्यादि धार्मिक स्थलों पर स्वस्तिक का चिन्ह विशेष रुप से मिलता है।
- बौद्ध धर्म में, स्वास्तिका को बुद्ध के शुभ पैरों के निशान का प्रतीक माना जाता है। स्वास्तिक का आकार बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांत में वर्णित शाश्वत चक्र का प्रतीक है। स्वास्तिक का प्रतीक बौद्ध धर्म में हिंदू धर्म के समान ही तंत्र की गूढ़ परंपराओं में विशेष रुप से पाया जाता है, जहां यह चक्र के सिद्धांतों और अन्य ध्यान सहायक उपकरण के साथ पाया जाता है।
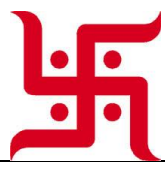
इनके अलावा अन्य देशों की संस्कृति में स्वस्तिक को विशेष रुप से शुभ एवं पवित्र माना गया हैं।

स्वस्तिक के विभिन्न लाभ

आज आधुनिक युग में नई खोज-अनुसंधान व अनुभवों के आधार पर विद्वानों का अनुभव हैं, कि उचित परामर्श से विभिन्न पदर्थ से स्वस्तिक का निर्माण करने पर सरलता से विभिन्न लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं। स्वस्तिक के उचित प्रयोग से आप भी धनवृद्धि, सुख-शान्ति, उच्च पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, कार्य में सफलता, स्वास्थ्य लाभ, वास्तुदोष निवारण, गृहक्लेश निवारण, शत्रु भय से रक्षण कर सकते है।

- व्यवसायिक प्रतिष्ठान की उत्तर दिशा में हल्दी से स्वस्तिक अंकित कर उसका पूजन विशेष लाभकारी सिद्ध होता है।
- हल्दी से अंकित किया गया स्वस्तिक शत्रु शमन करता है।
- आम की लकड़ी का स्वस्तिक घर के प्रवेश द्वार पर लगाने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है,
- जिस कोने में वास्तुदोष हो उस कोने में आम की लकड़ी का स्वस्तिक लगाने से वास्तुदोष मे कमी होती है।
- घर के पूजा स्थान में स्वास्तिक बनाने से घर में खुशहाली का आगमन होता है।
- घर के पूजा स्थान में या किसी मंदिर में स्वास्तिक बनाकर उस पर पांच तरह के अनाज रख के शुद्ध घी का दिपक जलाने से वांछित मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है।
- घर के पूजा स्थान में स्वास्तिक बनाकर उस पर इष्टदेव की मूर्ति स्थापित किया जाए तो मनोवांछित इच्छाएं शीघ्र पूर्ण होती है।

- घर के पूजा स्थान में तर्जनी अंगुली (Index Finger) से कुमकुम या सिंदूर से स्वास्तिक बनाकर पूजन करने से अनिद्रा दूर होती है, एवं दुःस्वप्न (बुरे सपने) आने बंद हो जाते हैं।
- विद्वानों के अनुसार चातुर्मास में मंदिर में अष्टदल कमल व स्वस्तिक बनाकर बना कर विधि-वत पूजन करने से स्त्री को अखंड सुहागन रहती है।
- पंच धातु से बने स्वस्तिक को प्रवेश द्वार पर लगा कर उसका पूजन करने से विभिन्न प्रकार के संकटो से रक्षा होती हैं।
- धन लाभ हेतु घर के पूजन स्थान में चांदी का नवरत्न जड़ीत स्वस्तिक स्थपित करना विशेष लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निरंतर धन लाभ हेतु चौखट की एक ओर कुमकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर चावल की ढेरी बनाकर उस पर एक सुपारी रख कलावा बांधकर नियमित पूजन करना लाभप्रद होता।
- धन लाभ के लिये स्वस्तिक से एक विशेष उपाय और किया जाता है। इस में दहलीज के दोनों ओर स्वस्तिक बनाकर उसकी पूजा करें। स्वस्तिक पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी पर कलवा बांधकर उसे ढेरी पर रखें इस उपाय से भी धन में लाभ मिलता है।

***

महर्षि वशिष्ठ के दर्शन का फल

संकलन गुरुत्व कार्यालय

माण्डव्य ऋषि वंश में एक विद्वान ब्राह्मण हुए जो सांसारिक जीवन को त्याग सत्य की खोज में निकल पड़े थे। ब्राह्मण सत्य की खोज के लिए अनेक जप-तप, व्रत-पूजन किए जिससे उसका अन्तःकरण शुद्ध हो गया। उसके पूर्व संग्रहित पाप कर्म जल गये। लेकिन पूर्ण संतोष नहीं मिला। तब अपनी खोज मे व्याकुल चित्त से ब्राह्मण जंगल से सत्य की खोज पुनः छोड़कर गाँव की और निकल पड़े चलते-चलते उन्हें एक जगह कुछ घर दिख उन्हों ने सोचा वहां चलकर जलपान करके वृक्ष के नीचे थोड़ा विश्राम करलूंगा ! कुछ ही कदम चले थे की महर्षि वशिष्ठजी ने ब्राह्मण के मन स्थिति भांप उन्हें बीच में ही रोक दिया और कहने लगे

"अरे ब्राह्मण ! तू कहाँ जाते हो ? ब्राह्मण नें उत्तर दिया मे सत्य खी खोज में भटकता फिर रहा हूं, अभी तक असफल रहा हूं, अतः वापस लोट रहा हूं। उसका उत्तर सुन महर्षि वशिष्ठजी बोले तू अंधेरी गुफा का साँप हो जाना, शिला के अन्दर का कीड़ा हो जाना अथवा मरुभूमि का मृग हो जाएं तो अच्छा होगा, लेकिन दुर्बुद्धि मनुष्य का संग करे तो अच्छा नहीं होगा। श्री वशिष्ठजी कहते हैं अरे ब्राह्मण ! तू जिससे मिलने के लिए दौड़ता जा रहा है वे दुर्बुद्धि लोग है। वहँ स्वयं अज्ञान की आग में जल रहे हैं। वे तुझे कैसे सुख दे सकेंगे ?

वशिष्ठ जी आगे कहते हैं,"हे ब्राह्मण ! तुम ज्ञानवानों का संग करना। वशिष्ठजी के वचन सुन ब्राह्मण के मन को खूब शांति मिलती है ।

ब्राह्मण वशिष्ठजी से पूछने लगे "हे भगवन्! आपके वचन एवं दर्शन से मेरे चित्त को शांति मिली है और भीतर में प्रसन्नता फैल गई है। लेकिन आपको देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि आपकी शरणागत में मेरा कल्याण अवश्य होगा । वशिष्ठ जी के दर्शन से पूर्ण संतोष से ब्राह्मण आंतरिक शांति को प्राप्त हुए।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

भविष्य ज्ञान के लिए रमल प्रश्नावली

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विधि: रमल प्रश्नावली से प्रश्न का उत्तर जान ने का तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बनाकर उस पर 1, 2, 3, 4 अंकित करा लें। फिर अपने संबंधित प्रश्न का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें। फेके हुवे पासे के उसका जो अंक आये, उसी अंक पर अपने प्रश्न का फल देखें। यदि किसी कारण पासा नहीं हो तो, यहां दर्शायी गई सारणी में अनामिका अंगुली रखकर अपने प्रश्नों का फल जान सकते हैं।

111	131	211	231	311	331	411	431
112	132	212	232	312	332	412	432
113	133	213	233	313	333	413	433
114	134	214	234	314	334	414	434
121	141	221	241	321	341	421	441
122	142	222	242	322	342	422	442
123	143	223	243	323	343	423	443
124	144	224	244	324	344	424	444

111. आपकी मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।
112. कोई महत्वपूर्ण कार्य करने से पूर्व अपने निर्णय पुर्विचार कर लें।
113. कठिन परिश्रम के बाद गया धन पुनः प्राप्त होगा।
114. पूर्ण विश्वास से सुख की प्राप्ति होगी।
121. अपना चरित्र साफ रखें एवं अनुचित कर्म से बचे।
122. समय शीघ्र बदलने वाला है। इष्ट उपासना करें।
123. किसी निर्णय को लेने से पूर्व अच्छितरह सोच-विचारलें। अन्यथा नुक्शान संभव हैं।
124. प्रतिकूल परिस्थिति में अपना संयम एवं धैर्य बनाये रखे। सफलता जरूर मिलेगी।
131. वास्तविकता में जीवन जीये व अपनी भावुकता पर नियंत्रण रखें।
132. कलकी चिंता छोड़कर वर्तमान में जीने का प्रयास करें।
133. सब्र का फल मीठा होता है। कर्मों का फल अवश्य प्राप्त होगा।
134. सच्चाई और ईमानदारी से अपने भाग्य को उज्जवल बनाये।
141. अपने इष्ट पर भरोसा रखे आपके शुभ दिन जल्द आने वाले है।
142. अच्छे कर्म करें फल भी अच्छा मिलेगा।
143. नीति और रीति से कार्य करें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।
144. धन लाभ उत्तम रहेगा, सत्कर्म करते रहें।
211. जल्दबाजी से बचे व किसी महत्वपूर्ण निर्णय पर सोच-विचार कर ही फैसला लें।
212. घर की सुख-समृद्धि बढेगी।

213. घर-परिवार में जल्द मांगलिक कार्य होगें। विधिवत इष्ट आराधना करते रहें।
214. अच्छे कर्म करते रहे जल्द ही आपके भाग्य का सितारा बुलंदियों पर होगा।
221. माता-पिता एवं बडे बुजुर्गोंकी सेवाकरें धन लाभ होगा।
222. जरुरत मंद की सहायता करें। भाग्य उज्जवल होगा।
223. नियमित देवी उपासना करें, औरतों का सम्मान करें सकल कार्य सिद्ध होगा।
224. पूरानी परेशानियों से जल्द छुटकारा मिलने वाला हैं।
231. दृढ़ निश्चिय से अपने कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करें सफलता निश्चिन्त मिलेगी।
232. अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें, अन्यथा हानी संभव हैं।
233. इष्ट आराधना करते रहें, आपके सारे कष्ट जल्द दूर हो जायेंगे।
234. प्रियजनो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।
241. आँख मूंद कर किसी पर भरोंसा मत करें, बडा़ नुक्शान उठाना पडेगा।
242. नकारात्मक विचारों को छोड़ कर सकारात्म सोच अपनाये कार्य सफल होगें।
243. उचित समय पर उचित निर्णय लेने में सक्षम बने अपको सभी प्रकार के सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।
244. अपने कार्य को पूर्ण ईमानदारी से करें, सफलता अवश्य मिलेगी।
311. ईश्वर पर भरोसा रखें आपका कार्य सफल होगा।
312. दुर्बुद्धि व दुष्ट विचारधारा वाले लोगों से सावधान रहें, यहं लोग आपका इस्तमाल कर सकते हैं।
313. आपकी इच्छा पूर्ण होगी।
314. जीवन में सकारात्मक द्रष्टि कोण अपनाये अवश्य सफलता मिलेगी।
321. आर्थिक लाभ मिलने की प्रबल संभावना हैं।
322. समय प्रतिकूल हैं, थोडा़ इन्तजार करें।
323. प्रियजनों की भावनाओं का सम्मान करें सफलता मिलेगी।
324. अपनों के बिच में रहकर कार्य करें, सफलता मिलेगी।
331. शत्रु पक्ष से सावधान रहें, आप पर गुप्त वार हो सकता हैं।
332. आपके सभी कार्य शीघ्र पूर्ण होंगे संदेह न करें।
333. समय शुभ हैं महत्वपूर्ण निर्णय से आपको विशेष लाभ की प्राप्ति होगी।

334. एकाग्रचित्त से अपने कार्य को संपन्न करें, अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।
341. शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।
342. सफलता की दौड़ में अपनो की अवहेलना न करें, अन्यथा भाग्य साथ छोड देगा।
343. बुराईयोंको दूरकरें व अपनी विचारधारा को शुद्ध रखें।
344. आपको जल्द ही इष्ट कृपा से लाभ की प्राप्ति होगी।
411. आपके भौतिक सुख साधन एवं धन-सम्पत्ति में वृद्धि होगी।
412. आपके उचित व्यवहार से आपके कार्य सिद्ध होगें।
413. किसी भी कार्य में अति आत्मविश्वास अच्छा नहीं हैं इसलिए दोबारा सोच कर निर्णय लें।
414. आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी।
421. आपको कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।
422. इस समय किसी कार्य में बड़ जोखिम नहीं उठायें।
423. भाग्य आपके साथ हैं, आपके सभी कार्य सफल होगें।
424. अपने कार्य में लापरवाहीं नहीं रखें, अन्यथा प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
431. किसी कार्य में जल्दबाजी अच्छी नहीं हैं, धैर्य रखें।
432. मौके का फायदा उठाये परिस्थिती अनुकूल हैं।
433. सावधानी से कार्य करें, सफलता मिलेगीं।
434. प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।
441. शुभ कर्मो का फल जल्द ही मिलने वाला हैं।
442. सतर्क रहकर कार्य करें शत्रुओं पर विजय मिलेगी।
443. शीघ्र ही अच्छा समय आनेवाला हैं।
444. आपका कार्य सफल होगा, अपने इष्ट पर भरोसा रखें।

विभिन्न के प्रकार यन्त्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

यंत्र कई रुपों में निर्मित किय जाते हैं। प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का उल्लेख मिलते हैं। यहां हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु यन्त्रों की प्रमुख श्रेणीयों का वर्णन कर रहे हैं।

भूपृष्ठ यन्त्र:

समतल आकार वाले यन्त्र अर्थात वह यन्त्र जिनका आधार समलत या धरातल पर हो उसे भूपृष्ठ यन्त्र कहां जाता हैं। यन्त्र क्र इसी समतल आधार पर यन्त्र की रेखाये, वर्ग, बिन्दु, त्रिभुज, चतुर्भुज, कमल दल, अंक, बीज मंत्र आदि को उत्कीर्ण किया जाता हैं। कहने का मतलब हैं की समतल आधार वाले यन्त्र को भूपृष्ठ यन्त्र कहां जाता हैं।

मेरुपृष्ठ यन्त्र:

मेरुपृष्ठ आगार वाले यन्त्र की आकृति मेरु की तरह उपर की ओर क्रमशः उठी हुई होती हैं जो देखने में पर्वताकार दिखती हैं। यंत्र का अंतिम भाग अर्थात शिखर उपर से नुकीला होता हैं, व नीचे का हिस्सा चौड़ा अर्थात फैला हुवा होता हैं, इस प्रकार के यंत्रों में नीचे से उपर का हिस्सा क्रमशः छोटा होता जाता हैं और आखिर में शिखर वाला हिस्सा नुकीला होता हैं। इस तरह के यन्त्रों में रेखाएं उभरी हुई या उत्कीर्ण या खुदी हुई होती हैं।

पाताल यन्त्र:

पाताल यन्त्र को मेरुपृष्ठ यन्त्र से विपरीत निर्मित किया जाता हैं जहां मेरुपृष्ठ यन्त्र में यन्त्र का शिखर होता हैं वहीं पाताल यन्त्र में यन्त्र का मध्य हिस्सा कटोरी के सामान अंदर की और से क्रमशः गहरा होता जाता हैं हैं।

मेरुप्रस्तार यन्त्र:

मेरुप्रस्तार यन्त्र, मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान होता हैं, लेकिन मेरुपृष्ठ यन्त्र में रेखांकन की क्रिया को उभारकर या उत्कीर्ण करके पूर्ण की जाती हैं, वहीं मेरुप्रस्तार यन्त्र में रेखांकन यन्त्राकार होता हैं। इस तरह के यन्त्र को देखने पर लगता हैं की संपूर्ण यन्त्र को टुकड़ों में काटकर एक-दूसरे पर आश्रित किया गया है।

कूर्मपृष्ठ यन्त्र:

कूर्मपृष्ठ यन्त्र में मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान शिखर नहीं होता। यह नीचे से चौकोर और उपर से गोलाई लिये होता हैं। लेकिन इसमें मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान शिखर नहीं होता। देखने में यह कछुएं की ऊची

पीठ के समान नझर आता हैं। इस प्रकार के यन्त्र को कूर्मपृष्ठ यन्त्र कहते हैं।

यन्त्रों का वर्गीकरण

1. रेखात्मक यंत्र, 2. आकृतिमूलक यन्त्र

1.रेखात्मक यंत्र

रेखात्मक यंत्र में केवल रेखाओं का प्रयोग किया जाता हैं, जो मुख्यतः त्रिकोण, चतुर्भुज, वक्र, कमलाकार, आयुध, वलय आदि को यथार्थपूर्ण दर्शाया जाता हैं।

2. आकृतिमूलक यन्त्र

आकृतिमूलक यन्त्र में रेखाओं को ज्यामितिक आकार में प्रयोग नहीं करके स्पष्ट रुप से चित्रांकन किया जाता हैं। यन्त्र के निर्माण में कार्य उद्देश्य के अनुशार विभिन्न प्रकार के देव-देवी, मानव, पशु-पक्षि, वृक्ष आदि के स्वरुप का चित्रांकन किया जाता हैं।

रेखात्मक यंत्र के निम्न चार वर्ग होते हैं।

1. बीजमंत्रयुक्त यंत्र ।
2. मंत्रवर्णयुक्त यंत्र ।
3. अंकगर्भित यंत्र ।
4. मिश्र यंत्र ।
5.

बीजमंत्रयुक्त यंत्र:

बीजमंत्रयुक्त यंत्र को किसी देवी-देवता के संक्षिप्त रुप के मन्त्र का प्रयोग किया जाता हैं। अर्थात देवी-देवताओं के शक्तिशाली बीज मंत्रों का प्रयोग किया जाता हैं। जो संबंधित देवी-देवताओं का सक्षिप्त रुप होता हैं अर्थात जिसमें उस देवी-देवता की गुप्त शक्तियां निहित होती हैं। जिससे उस बीज मन्त्र के स्मरण या उच्चारण से ही साधक की समग्र कामनाएं पूर्ण होने लगती हैं। बीजमंत्रयुक्त यंत्र को सर्वाधिक शक्तिशाली यन्त्र माना जाता हैं।

मंत्रवर्णयुक्त यंत्र:

मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में विशेष्ट वर्णों को क्रम में सजाकर मन्त्र को दर्शाया जाता हैं। मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में प्रयुक्त वर्णों द्वार ही मन्त्रों का निर्माण किया गया होता हैं इसलिए मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में मन्त्र शक्ति विशेष रुप से समाहित होती हैं।

अंकगर्भित यंत्र:

अंकगर्भित यंत्र में अंकात्मक देवताओं का निवास होता हैं। हिन्दू धर्म में एसा माना जाता हैं की प्रत्येक अंक किसी-न-किसी देवता का प्रतिक होता हैं। इसलिए अंकों को देवता के प्रतिनिधि के रुप में विभिन्न उद्देश्य से यन्त्रों के निर्माण के लिए अंकों का प्रयोग किया जाता हैं। इस प्रकार के यन्त्रों को अंकगर्भित यंत्र कहते हैं।

मिश्र यंत्र:

मिश्र यंत्र में उपर दर्शाये गये तीनों श्रेणीयों का प्रयोग एक साथ (अर्थात बीजमंत्रयुक्त यंत्र, मंत्रवर्णयुक्त यंत्र, अंकगर्भित यंत्र) हुवा हो या एक के साथ दूसरी श्रेणी का प्रयोग होने पर उसे मिश्र यंत्र कहते हैं।

शास्त्रों में यंत्र के मुख्य सात प्रकार बताये गय हैं।

शास्त्रों में यन्त्रों का वर्गीकरण उसकी उपयोगिता के आधार पर किया गया हैं। जिसके अनुशार उसके क्रम इस प्रकार हैं..

1. शरीर यन्त्र
2. धारण यन्त्र
3. आसन यन्त्र
4. मण्डल यन्त्र
5. पूजा यन्त्र
6. छत्र यन्त्र
7. दर्शन यन्त्र
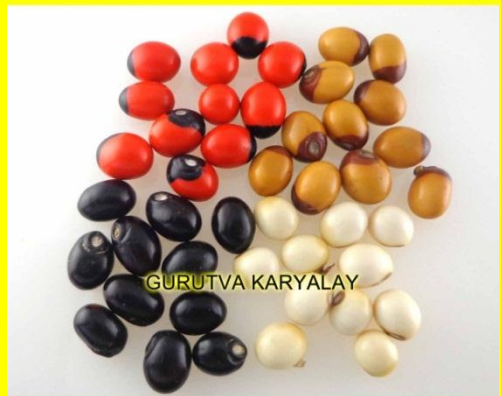
प्रश्न कुण्डली से जाने स्वास्थ्य लाभ के योग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सभी व्यक्ति स्वयं के और अपने स्वजनो के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है। लेकिन हमारा शरीर में विभिन्न कारणो से स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां समय के साथ-साथ आती-जाती रहती हैं।

लेकिन यदि बिमारी होने पर स्वास्थ्य में जल्दी सुधार नहीं होता तो, तरह-तरह की चिंता और मानसिक तनाव होना साधारण बात हैं। कि स्वास्थ्य में सुधार कब आयेगा?, कब उत्तम स्वास्थ्य लाभ होगा?, स्वास्थ्य लाभ होगा या नहीं?, इत्यादि प्रश्न उठ खडे हो जाते हैं।

मनुष्य की इसी चिंताको दूर करने के लिए हजारो वर्ष पूर्व भारतीय ज्योतिषाचार्यो नें प्रश्न कुंडली के माध्यम से ज्ञात करने की विद्या हमें प्रदान की हैं। जिस के फल स्वरुप किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्नो का ज्योतिषी गणनाओं के माध्यम से सरलता से समाधन किया जासकता हैं!

प्रश्न कुंडली के माध्यम से स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु सर्व प्रथम प्रश्न कुंडली में रोगी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग हैं या नहीं यह देख लेना अति आवश्यक हैं।

आपके मार्गदर्शन हेतु यहां विशेष योग से आपको अवगत करवा रहे हैं।

लग्न में स्थित ग्रह या लग्नेश से रोग मुक्ति के योग।

- यदि लग्न में बलवान ग्रह स्थित हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्ने (लग्न का स्वामी ग्रह) और दशमेश (दशम भाव का स्वामी ग्रह) मित्र हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं।
- प्रश्न कुंडली में चतुर्थेश (चतुर्थ भाव का स्वामी ग्रह) और सप्तमेश (सप्तम भाव का स्वामी ग्रह) के बीच मित्रता हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग बनते हैं।

- यदि लग्नेश (लग्न का स्वामी ग्रह) का चन्द्र के साथ संबंध हो और चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त या द्रष्ट हो या केन्द्र मे स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता हैं।
- यदि कुंडली में लग्नेश (लग्न का स्वामी ग्रह) और चन्द्र शुभ ग्रहो से युक्त या द्रष्ट होकर केन्द्र में स्थित हो और सप्तमेश वक्री न हो एवं अष्टम भाव के स्वामी ग्रह से प्रभाव मुक्त हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

चन्द्रमा से रोग मुक्ति के योग

- यदि चन्द्र स्वराशि या उच्च राशि मे बलवान हो कर किसी शुभ ग्रह से युक्त हो या द्रष्ट हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होते देखा गया हैं।
- यदि प्रश्न कुंडली में यदि चन्द्र चर राशि अर्थात द्विस्वभाव राशि में स्थित हो कर लग्न या लग्नेश से द्रष्ट हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की संभावना प्रबल होती हैं।
- यदि चन्द्र स्वराशि से चतुर्थ या दशम भाव में स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो ने के योग बनते हैं।
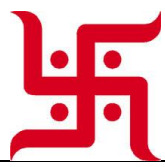
- प्रश्न कुंडली में शुभ ग्रहो से द्रष्ट चन्द्र या सूर्य लग्न में, चतुर्थ या सप्तम भाव में स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग बनते हैं।

प्रश्न कुंडली के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब होने के योग देख लेना भी आवश्यक होता हैं।

स्वास्थ्य लाभ में विलंब होने के योग

- सधारणतः जातक में षष्टम भाव व षष्टेश से रोग को देखा जाता हैं।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्नेश और दशमेश के बीच अथवा चतुर्थेश और सप्तमेश ग्रहो के बीच में शत्रुता हो तो रोग बढने की संभावनाऐ अधिक होती हैं और स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता हैं।
- प्रश्न कुण्डली में यदि षष्ठेश अष्टमेश अथवा द्वादशेश के साथ युति या द्रष्टी संबंध बनाता हो तो स्वास्थ्य लाभ की संभावना अधिक कम होती हैं और स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता हैं।
- प्रश्न कुण्डली में यदि लग्न मे चन्द्र या शुक्र की स्थित हो तो रोग शीघ्र पीछा नहीं छोडता।
- प्रश्न कुण्डली में यदि लग्नेश एवं मंगल की किसी ही भाव में युति हो तो स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता हैं।
- यदि लग्नेश द्वादश भाव मे स्थित हो तो रोगी देर से रोगमुक्त होने की संभावनाऐ होती हैं।
- यदि लग्नेश षष्टम, अष्टम भाव मे स्थित हो और अष्टमेश केन्द्र मे स्थित हो तो रोग शीघ्र दूर नहीं होते।

यदि प्रश्न कुंडली में स्वास्थ्य लाभ में विलंब होने के योग बन रहे हो तो चिंतित होने के बजाय शास्त्रोक्त उपाय इत्यादि करना लाभदायक सिद्ध होता हैं। एसी स्थिति में विद्वानो के मत से महामृत्युंजय मंत्र-यंत्र का प्रयोग शीघ्र रोग मुक्ति हेतु रामबाण होता हैं।

प्रश्न कुंडली का अध्ययन करते समय यह योग भी देखले की रोगी को उचित उपयार प्राप्त हो रहा हैं या नहीं।

रोग का उचित उपचार होने के योग हैं या नहीं!

- प्रश्न कुण्डली में प्रथम, पंचम, सप्तम एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा कमज़ोर या पाप ग्रह से पीड़ित हों तो रोग का उपचार कठिन हो जाता हैं।
- यदि चन्द्रमा बलवान हो और 1, 5, 7 एवं 8 भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उपचार से रोग का दूर होना संभव हो पाता हैं।
- यदि प्रश्न कुंडली में तृतीय, षष्टम, नवम एवं एकादश भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उपचार के बाद ही रोग से मुक्ति मिलती हैं।
- यदि प्रश्न कुंडली में सप्तम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों और सप्तमांश बलवान हों तो रोग का उपचार संभव होता हैं।
- यदि प्रश्न कुंडली में चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह स्थित से भी ज्ञात हो सकता है कि रोगी को दवाईयों से उचित लाभ प्राप्त होगा या नहीं।

प्रश्न कुंडली देखते समय शरीर के विभिन्न अंगो पर ग्रहो के प्रभाव एवं बिमारीयों को जानना भी आवश्यक होता हैं।

ज्योतिषी सिद्धांतो के अनुशार कुंडली के बारह भाव शरीर के विभिन्न अंगो को दर्शाते है।

- प्रथम भाव :सिर, मस्तिष्क, स्नायु तंत्र.
- द्वितीय भाव :चेहरा, गला, कंठ, गर्दन, आंख.
- तीसरा भाव : कधे, छाती, फेफडे, श्वास, नसे और बाहें.
- चतुर्थ भाव :स्तन, ऊपरी आन्त्र, ऊपरी पाचन तंत्र
- पंचम भाव :हृदय, रक्त, पीठ, रक्तसंचार तंत्र.
- षष्ठम भाव :निम्न उदर, निम्न पाचन तंत्र, आतें, अंतडियाँ, कमर, यकृत.

- सप्तम भाव :उदरीय गुहिका, गुर्दे.
- अष्टम भाव :गुप्त अंग, स्त्रावी तंत्र, अंतडियां, मलाशय, मूत्राशय और मेरुदण्ड.
- नवम भाव :जॉघें, नितम्ब और धमनी तंत्र.
- दशम भाव :घुटने, हडियां और जोड़.
- एकादश भाव :टागे, टखने और श्वास.
- द्वादश भाव :पैर, लसीका तंत्र और आंखे.

प्रश्न कुण्डली में रोग से संबंधित भाव

- प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्न कुंडली में लग्न स्थान चिकित्सक भाव होता हैं। अतः शुभ ग्रह प्रश्न कुंडली के लग्न में शुभ ग्रह की स्थिति से ज्ञात होता हैं की रोगी को किसी कुशल चिकित्सक की सलाह प्राप्त हो रही हैं या होगी।
- यदि अशुभ ग्रह स्थित हो तो समझले की रोगी को किसी कुशल चिकित्सक की आवश्यकता हैं।
- प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्न कुंडली में चतुर्थ स्थान उपचार और औषधियों अर्थात दवाईयों का स्थान हैं। चतुर्थ भाव में यदि शुभ ग्रह या शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति हो तो समझे की रोग सामान्य उपचार से शीघ्र ठीक हो सकता हैं।
- कुंडली में छठा एवं सातवां भाव रोग का स्थान होता हैं।
- कुंडली में दशम भाव रोगी का मानाजाता हैं।
- यदि प्रश्न कुंडली में षष्टम एवं सप्तम भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो और षष्ठेश और सप्तमेश निर्बल हों तो स्वास्थ्य लाभ धीरे धीरे होने का संकेत मिलता हैं।

नोट: प्रश्न कुंडली का विश्लेषण सावधानी से करना उचित रहता हैं। विद्वानो के अनुशार प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय संबंधित भाव एवं भाव के स्वामी ग्रह अर्थातः भावेश एवं भाव के कारक ग्रह को

रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

नीलम

शनि का रत्न नीलम शनि ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। नीलम को शनि का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे :- नीलम, नील मणि,

सस्कृत मे :- नील, महानील, शनिरत्न, शनि प्रिय, नील रत्न, नीलोपान, शोरि रत्न, इन्द्रनील, तृणाशाही आदि नामो से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- याकूत, कबूद

अरबी मे :- याकूत-अल-असीर

लेटिन मे :- सेफायरस

अंग्रेजी :- ब्लू सैफायर

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में शनि की महादशा या अंतरदशा में शनि के अशुभ प्रभावो को दूर करने के लिए एवं शनि ग्रह के कोप को शांत करने के लिए जानकार ज्योतिषी की सलाह से नीलम धारण करना एक उत्तम उपाय माना जाता हैं।

प्राप्ति स्थान:

भारत में कश्मीर से प्राप्त होने वाले नीलम सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। जो **मयूर नीलम** के नाम से जाने जाते हैं, क्योंकि इस नीलम का रंग मोर की गर्दन के रंग के समान नीला होता हैं। इस के अलावा नीलम का प्राप्ति स्थान मुख्य रूप से श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यू साउथ वेल्स, अमेरिका, यूरोप, रुस आदि नीलम प्राप्त होते हैं। लेकिन उच्च कोटी के बहुमूल्यवान नीलम श्रीलंका के माने जाते हैं।

नीलम के लाभ

- निलम धारण करने से व्यक्ति को रोग, दोष, दुख-दारिद्रय से मुक्त करदेता हैं।
- निलम धारण करने से व्यक्ति को धन-धान्य, सुख-संपत्ति, बुद्धि, बल, यश, आयु, संपत्ति-संतति की प्राप्ति होती हैं।
- मान्यता के अनुशार नीलम धारण करने से चरित्र स्वच्छ रहता हैं धारण करता में अनैतिकता के गुण जागृत नहीं होते।
- प्रेम में सफलता हेतु नीलम भाग्यवान रत्न माना जाता हैं।
- अनैतिक व पाप कर्मो में लिप्त व्यक्तियों को नीलम विपरीत फल प्रदान करता हैं।
- मन एवं आत्मा की प्रसन्नता हेतु नीलम धारण करना मददगार सिद्ध होता हैं।
- नीलम धारण करने से श्वास, खांसी और पित्त से संबंधित रोगों को शांत करता हैं।

मान्यता:

- गाय के दूध में नीलम डाल दिया जाय तो दूध का रंग नीला हो जाता है।
- कांच के गिलास में पानी भरकर उसमें नीलम रत्न डाल दिया जाय तो पानी से नीले रंग की आभा स्पष्ट निकलती हुई दिखाई देती हैं।
- यदि नीलम को धूप में रखा जाय तो इससे नीले रंग की तीव्र किरणें निकलती दिखाई देती हैं।
- एसी मान्यता हैं की नीलम को विषैले सांप के साथ रखने से सांप मर जाता हैं।
- नीलम धारण करने से भूत-प्रेत आदि आसुरी बाधाओं से छुटकारा मिलता हैं।
- नीलम धारण करने से व्यक्ति भविष्यवाणी करने में समर्थ हो सकता हैं।
- दुष्ट एवं कुकर्म में लिप्त व्यक्ति यदि श्रेष्ठ गुणो वाला नीलम भी धारण करता हैं तो उस नीलम की चमक फिकी हो जाती हैं।

- कुछ विद्वानो का मत हैं की विष प्रभाव को कम करने में नीलम को काफी असरकारक होता हैं।
- चोट या घाव होने पर रक्त प्रवाह रोकने में नीलम सहायक होता हैं।
- नीलम रत्न धारण करने से उसके शुभ-अशुभ प्रभाव कुछ ही घंटों के भीतर प्रकट कर देता हैं।
- नीलम रत्न धारण करने से मुख की कांति तथा नेत्रों की ज्योति में वृद्धि होती हैं।
- नीलम धारण करने के पश्चात रात में बुरे-भयावह स्वप्न दिखाई दें अथवा स्वयं की मुखाकृति में अंतर आ जाय या नेत्र रोग हो जाये अथवा कोई आकस्मिक दुर्घटना, भय, चोरी, रोग या अन्य नुक्शानकारी प्रभाव दिखाई दे तो नीलम को तुरंत उतार देना चाहिए।
- क्रूर कर्म करने वाले व्यक्तियों को हमेशां नीलम धारण करना लाभदायक होता हैं।
- नीलम धारण करने से व्यक्ति में धैर्य व साहस की वृद्धि होती हैं।
- नीलम पहनने से व्यक्ति की कार्य क्षमता बढ़ती हैं व धारणकर्ता को अपनी मेहनतका पूर्ण फल प्राप्त होता हैं।

स्वास्थ्य:

नीलम धारण करने से नेत्र रोग, दिमाग की गर्मी, पागलपन, ज्वर, अजीर्ण, उपदंश, खांसी, हिचकी, मुंह से खून आना, उल्टी आदि रोगो में लाभप्राप्त होता हैं।

दोष:

- जिस नीलम में दों से अधिक रंग हो, एसा नीलम धारण करना पत्नी के लिये नुक्शानकारी होता हैं।
- जिस नीलम की चमक फीकी हो, एसा नीलम धारण करने से आत्मिय बंधु/बांधवो का होता हैं।
- जिस नीलम में अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा नीलम धारण करना जीवन में दुःखो से सम्मुखीन करवाता हैं।
- जिस नीलम में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे नीलम को धारण करने से दरिद्रता आती हैं।
- जिस नीलम में स्वेत रंग की रेखा हो, एसा नीलम धारण करने से अस्त्र-शस्त्र के आघात से मृत्यु के योग बनाता हैं।
- जिस नीलम में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा नीलम धारण करना व्यक्ति के स्वास्थ्य, सुख व संतान के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस नीलम का रंग दूधया हो, एसा नीलम धारण करना धन-संपत्ति का नाश करने वाला होता हैं।
- जिस नीलम में गड्ढा हो एसे नीलम को धारण करने से शत्रु से कष्ट प्राप्त होता हैं।

जिस नीलम में जाल के समान रेखाएं हो एसा नीलम रोग शोक में वृद्धि करने वाला होता हैं।
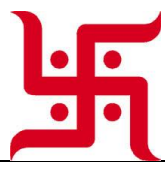
>> क्रमशः अगले अंक में ...

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. **28.00** **से** Rs.**100.00**

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

नव मुखी रुद्राक्ष:

- नव मुखी रुद्राक्ष नवदुर्गा का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को भैरव का प्रतिक भी माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को नवग्रह, नव-नाथों एवं नवधा भक्ति का प्रतीक भी समझा जाता हैं।
- नवमुखी रुद्राक्ष नव निधियों के प्रदान करने वाला हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को हजारों-लाखो-करोड़ो पापों को नष्ट करने वाला कहा गया हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष मृत्यु भय दूर होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार की साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को कार्य सिद्ध के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शत्रुपक्ष पराजित होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष कोर्ट-कचेरी के कार्यो में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से हृदय रोग नियंत्रण करने में विशेष लाभप्रद होता हैं।

नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं वं यं रं लं॥

दश मुखी रुद्राक्ष:

- दश मुखी रुद्राक्ष भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप

माना जाता हैं। दश मुखी रुद्राक्ष को यम एवं दस दिक्पाल का स्वरुप भी माना गया हैं।

- एसा मानाजाता हैं कि दस मुखी रुद्राक्ष में भगवान विष्णु के दशों अवतारों की शक्ति समाहित होती हैं।
- तांत्रिक साधनाओं में दस मुखी रुद्राक्ष का विशेष महत्व माना जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भूत-प्रेत, मारण-मोहन इत्यादि तांत्रिक बाधाओं के दुष्प्रभाव प्रभाव नहीं होता।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा होती हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र ही मनुष्य का यश दशों दिशाओं में फेल जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य की सकल मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- रोगों को शांत करने में दस मुखी रुद्राक्ष से विशेष लाभदायक होता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से ग्रहों के अशुभ प्रभाव शांत होते हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष सभी प्रकार की बाधाओं का नाश कर, मनुष्य को सुख-शांति व समृद्धि प्रदान करता हैं

दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ॥

>> क्रमश: अगले अंक में ...

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

- स्वप्न में झगडा होते देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में झरना ठंडे पानी का देखना संकेत है, लेकिन गर्म पानी का झरना रोग से पीड़ित होने संकेत है।
- स्वप्न में झंडा सफेद रंग का या किसी मंदिर का देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में झंडा हरे रंग का देखना यात्रा में कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में झंडा पीले रंग का देखना बीमारी होने का संकेत है।
- स्वप्न में झाड़ू लगाते देखना घर में चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में झुनझुना देखना परिवार में सुख-समृद्धि बढ़ने का संकेत है।

- स्वप्न में टंकी खाली देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में टंकी भरी हुई देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में टाई सफेद रंग की देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में टाई रंगीन देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में टेलीफोन करते देखना नये लोगों से मित्रता होने का संकेत है।
- स्वप्न में टेबल देखना लेने-देने संबंधित कार्य से लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में टैक्स देते देखना चलते कार्य में रूकावट होने का संकेत है।
- स्वप्न में टैक्स लेते देखना आर्थिक लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में टोकरी खाली देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में टोकरी भरी देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में टोपी उतारते देखना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में टोपी सर पर रखी देखना स्वजनो से अपमान होने का संकेत है।

- स्वप्न में डंडा देखना दुश्मन से सावधान रहने का संकेत है।
- स्वप्न में डफली बजाते देखना घर में मांगलिक कार्य होने का संकेत है।
- स्वप्न में डाक खाना देखना बुरे समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में डाकिया देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में डॉक्टर देखना निराशा मिलने का संकेत है।

- स्वप्न में डाकू देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में डिब्बा खाली देखना शुभ संकेत हैं।
- स्वप्न में डिब्बा भरा देखना अशुभ संकेत हैं।

- स्वप्न में तरबूज देखना धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में तराजू देखना कार्य उचित ढंग से पूर्ण होने का संकेत है।
- स्वप्न में तबला बजते देखना जीवन में सुख-शांति प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में तकिया देखना समाज में मान सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में तलवार देखना धर्मिक कार्य संपन्न होने एवं शत्रु पर विजय प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में तपस्वी देखना मन की शांति मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तला पकवान खाते देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तलाक देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में तमाचा मारते देखना शत्रु पर विजय प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में तराजू में तुलते देखना भयंकर बीमारी होने का संकेत है।
- स्वप्न में तवा खाली देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में तवे पर रोटी सेकते देखना धन-संपत्ति बढने का संकेत है।
- स्वप्न में तहखाना देखना तीर्थ यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में ताम्बा देखना सरकार से लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तालाब में तैरते देखना स्वस्थ्य लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में ताला देखना चलते काम में रूकावट आने का संकेत है।
- स्वप्न में ताली बजते देखना बिगडे कार्य बनने का संकेत है।
- स्वप्न में तांगा देखना जीवन में सुख वृद्धि एवं यात्रा में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में ताबीज बांधा देखना कार्य में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में ताबीज़ देखना – शुभ समय का आगमन होने का संकेत है।

- स्वप्न में ताश के पत्ते देखना किसी से लडाई होने का संकेत है।
- स्वप्न में तारे देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में तितली देखना शीघ्र विवाह होने व प्रेम की वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में तितली उड़ती दिखे तो दांपत्य जीवन में क्लेश होने का संकेत है।
- स्वप्न में तितली पकड़ते देखना संतान सुख में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में तिल देखना व्यापार में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तिराहा (तीन रास्ते) या त्रिसंगम देखना लडाई-झगडा होने का संकेत है।
- स्वप्न में त्रिशूल देखना महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में त्रिमूर्ति देखना नौकरी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तिजोरी बंद करते देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में तिजोरी टूटती देखना व्यापार में बढोतरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में तिलक करते देखना व्यापार में बढोतरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में तूफान देखना या उसमे फँसते देखना संकट से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में तेल या तेली को देखना समस्या बढने का संकेत है।
- स्वप्न में तोप देखना शत्रु पर विजय प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में तोता देखना प्रसन्नता बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में तोंद बढ़ी देखना पेट संबंधित परेशानी होने का संकेत है।
- स्वप्न में तोलिया देखना स्वस्थ्य लाभ मिलने का संकेत है।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 7 स्वामी केतु

मूलांक 7	शत्रु अंक:- 1, 9
स्वामी ग्रह:- केतु	सम:- 3,4 5,8,
मित्र अंक:- 2, 6	स्व अंक:- 7

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 7, 16 व 25 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 7 होता है।

मूलांक 7 अंक के व्यक्ति अधिक सहनशील और सहयोगी विचार धारा वाले होते हैं मूलांक 7 वाले व्यक्ति को परखना कठिन होता हैं क्योकि इन लोगों के स्वभाव में उतार-चढ़ाव होता रहता हैं।

व्यक्ति की प्रकृति कार्य क्षेत्र में आधारभूत एवं अधिक रुचिपूर्ण होती हैं।

मूलांक 7 का स्वामी ग्रह केतु हैं, इसलिए मूलांक 7 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर केतु का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 7 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर केतु ग्रह की अनुकूलता के कारण केतु ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। केतु ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति की स्वतंत्र विचार धारा और विशाल व्यक्तित्व होता हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति दूसरों से जरा हटके कार्य करने में विश्वास अरखते हैं इसी लिये इन में विशेष गुण होते हैं की यह लोग वेस्ट में से बेस्ट बना देते हैं अर्थात बेकार या व्यर्थ वस्तुओं में से बहुउपयोगी सामग्रीयां प्राप्त कर लेते या बना लेते हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति का मन-मस्तिष्क खाली या निष्क्रिय नहीं रह सकता, इसलिए वह हर क्षण कुछ ना कुछ सोचते ही रहते हैं। इसलिए व्यक्ति खाली समय में भी कुछ ना कुछ नया करने का अवसर खोजते रहते हैं। मूलांक 7 वाले व्यक्ति को अपनी एवं दूसरों की स्वतंत्रता अधिक प्रिय होती हैं इसलिए व्यक्ति किसी प्रकार से स्वतंत्रता भंग हो यह बर्दास्त नहीं कर सकते। व्यक्ति के इस अनोखे गुण के कारण उसकी समाज में मान-सम्मान एवं पद-प्रतिष्ठा दूसरों के मुकाबले जरा हटके होती हैं।

व्यक्ति की जान पेहचान ऊँचे और बड़े लोगों से होने के कारण व्यक्ति जल्द उच्च स्थान को प्राप्त करने में समर्थ होता हैं। व्यक्ति को अपने मित्रों एवं प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति साहसी होने के कारण साहसिक कार्यो में विशेष रूचि रखते हैं जिसमें उन्हें सफालता भी मिलती हैं। इसके अलावा व्यक्ति का झुकाव कला के प्रति भी हो सकता हैं जिस कारण उसे कला के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त हो सकती हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति का आर्थिक पक्ष कमजोर होता हैं जिस कारण उन्हें धन संग्रह करने में कठिनाई

होती हैं। व्यक्ति को यात्रा-भ्रमण इत्यादि में विशेष रुचि होने के कारण व्यक्ति इस पर अधिक धन व्यय कर सकते हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति का आत्म विश्वास अच्छा होता हैं, इस कारण व्यक्ति दूसरों के मन की बात पढ़ने में भी माहिर होते हैं। इसके अलावा व्यक्ति में दूसरों को अपनी और आकर्षित करने के गुण भी होते हैं। जिस कारण यह लोग प्रायः समय लोगों से अपना इच्छित काम निकाल लेते हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति स्वतंत्रता प्रिय होने के कारण उन्हें पुरानी रूढ़िवादी रीति या परंपरा अधिक रास नहीं आती व्यक्ति इन रीति या परंपराओं के लिए परिवर्तनशील विचारधारा रखते हैं।

प्रायः मूलांक 7 वाले व्यक्ति दूरस्थ स्थानों या देशों की यात्रा करना अधिक पसंद करते हैं इस कारण अधिकतर मूलांक 7 वाले व्यक्ति एसी ही रोजगार के साधन खोजते हैं जिसमें उन्हें बार-बार यात्रा के अवसर प्राप्त होते हों।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति काल्पनिक विचार अधिक करने वाले एवं भावुक स्वभाव के होते हैं, इस कारण व्यक्ति को अच्छे बुरे की की परख नहीं होती।

मूलांक 7 वाले अधिक तर लोगों को जल्दी से निर्णय लेने में असफलता या कष्ट का अनुभव करते हैं। अनेक बार व्यक्ति को ठोस निर्णय के कारण ही अधिक लाभ की प्राप्ति भी होती हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति में अपने कार्य क्षेत्र की व्यवस्था को संभालने की अद्भुत शक्ति होती हैं, जिस कारण यह लोग किसी के दबाव में या किसी के नेतृत्व में उचित कार्य नहीं कर सकते या अपनी प्रतिभा नही दिखा सकतें यदि व्यक्ति किसी कें अंदर कार्य करता हैं तो उसकी प्रगति अधिक नहीं हो सकती व्यक्ति स्वयं भी अपनी प्रगति को रुका हुवा या बंधा हुवा पाते हैं।

व्यक्ति को सामाजिक कार्य या दूसरों के कार्य में सहायता या हस्तक्षेप करने की आदत होती हैं जिस के कारण उन्हें कई बार निन्दा एवं बदनामी से सम्मुखिन होना पड़ाता हैं, जिस कारण व्यक्ति हमेशा दुःखी रहते हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्ति की सबसे बड़ी कमी होती हैं की वह दूसरों के सामने स्वयं को अधिक बुद्धिमान, शक्तिशाली एवं चालाक दिखाने का प्रयास करते हैं। जिस कारण कई लोगों से शत्रुता कर बैठते हैं। व्यक्ति को अपनी खुसामद करने वाले लोग अधिक रास आते हैं व्यक्ति खुसामत कर्ता पर कुछ भी देने में संकोच नहीं करते।

यदि मूलांक 7 वाले व्यक्ति दुष्ट प्रकृत्ति के लोगों से अधिक संपर्क में रहते हैं तो उनमें भी दुष्ट प्रवृत्तिया जल्दि घर कर जाती हैं। मूलांक 7 वाले व्यक्ति विदेश भ्रमण के भी अधिक इच्छुक होते हैं। मूलांक 7 वाले व्यक्ति सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण व्यक्ति सामाजिक कार्य में भी व्यस्त रहते हैं। व्यक्ति का स्वभाव थोडा शंकाशील होता हैं।
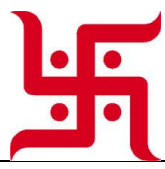
मूलांक 7 वाले व्यक्ति में विपरित परिस्थिति में भी कष्टों एवं संकटों से लड़ने की अद्भुत सहनशक्ति होती हैं। यदि व्यक्ति एक बार कुछ करने की ठान ले तो उस लक्ष्य पर पहूंच कर ही दम लेते हैं।

शुभ वर्षः

16,25,34,43,52,61,70 वां वर्ष हैं, तिथि 6,15,24 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में सोमवार या शनिवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्यः

व्यक्ति को चर्मरोग घेरे रहते हैं। खुजली या दाद होनेकी संभावना बनी रही हैं। चर्म संबंधि षिकायत होती ही रहती हैं। आँख, उदर तथा फेफड़ों से संबंधि बीमारियां, गुप्त तथा कठिन रोग एवं फोड़े आदि की षिकायते रहती हैं। अत्याधिक तनाव, सदैव किसी चिंता में रहते हैं, बदहजमी एवं कब्ज की शिकायत, नींद भी कम आती हैं।

उपयुक्त आहार:

सेब, अंगूर, ककड़ी, प्याज, मूली, गाजर, टमाटर, पालक, इमली एवं सौंफ उपयोगी हैं।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति फिल्म, तैराकी, वायुसेना, पर्यटन, जल-जहाज, डेरी, ड्राईविंग, दवाई, जासूसी, तरल पदार्थ, कुस्ती, रबड़, प्लास्टीक, कला, जादुगर, फूटनीति, भूमिगत पदार्थ, अनुवाद, लेखन, संपादन, पत्रकारिता, राजनीति आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए अनुकूल दिशा वायव्य एवं पश्चिम है। व्यक्ति के लिए हल्का पीला, सफेद, नीला, आसमानी, गुलाबी, आदि रंग शुभसूचक है।

मूलांक 7 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपका **मूलांक** के स्वामी ग्रह केतु के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी मध्यमा उंगली में लहसुनिया (केटस आई) धारण कर सकते हैं। अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित केतु यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

व्रत: केतु ग्रह के लिए कोई दिन निश्चित नहीं किया गया हैं, इसलिए केतु को प्रसन्न करने हेतु मंगलवार या शनिवार के दिन व्रत किया जा सकता हैं। केतु का व्रत करने से आकस्मिक दुर्धटना आदि से रक्षा होती और दुःख दरिद्रता, आधि-व्याधि का अंत होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका **मूलांक** स्वामी केतु हैं अतः केतु ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 9 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 7 मुखी या 14 मुखी और 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भी आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- केतु

वार:- मंगलवार

केतु कि शांति हेतु सात प्रकार के वैदूर्य, अनाज, काजल, झंडा, ऊनी कपड़ा, तिल आदि का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- माता-पिता एवं बडे-बुजुर्गों का सम्मान करें।
- अस्पताल, अनाथालय आदि में निस्वार्थ सेवा करें।
- भगवान शिव, विष्णु या माँ दुर्गा का स्मरण करते हुवे दिन की शुरुवात करें।
- भोजन करते समय सिर ढक कर न रखें और दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन न करें।
- सफाई कर्मचारी से दुर्व्यवहार न करें।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***
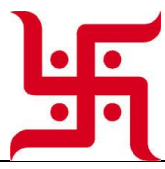
कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।
कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दु:खदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।
यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	**पारद शिवलिंग+नंदि**	**पारद शिवजी**	**पारद काली**
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	**पारद दुर्गा**	**पारद सरस्वती**	**पारद सरस्वती**
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	**पारद हनुमान 3**	**पारद हनुमान 1**	**पारद कुबेर**
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।
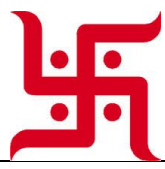
विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com
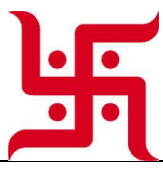
मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
2	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	दशमी	13:46	हस्त	27:00	आयुष्मान	27:25	विष्टि	13:46	कन्या	-
3	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	एकादशी	12:47	चित्रा	26:49	सौभाग्य	25:31	बालव	12:47	कन्या	14:53
4	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वादशी	12:09	स्वाती	26:59	शोभन	23:54	तैतिल	12:09	तुला	-
5	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	त्रयोदशी	11:55	विशाखा	27:33	अतिगंड	22:35	वणिज	11:55	तुला	21:23
6	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्दशी	12:08	अनुराधा	28:35	सुकर्मा	21:38	शकुनि	12:08	वृश्चिक	-
7	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अमावस्या	12:50	जेष्ठा	30:6	धृति	21:03	मघा	12:50	वृश्चिक	-
8	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकम	14:00	जेष्ठा	06:07	शूल	-	बव/बालव	-	वृश्चिक	06:07

2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
2	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	दशमी	13:46	-
3	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	एकादशी	12:47	उत्पन्ना एकादशी, उत्पत्ति एकादशी व्रत (सर्वे), वैतरणी एकादशी,
4	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वादशी	12:09	भौम-प्रदोष व्रत (ऋणमोचन हेतु उत्तम),
5	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	त्रयोदशी	11:55	मासिक शिवरात्रि व्रत,
6	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्दशी	12:08	श्राद्ध की मार्गशीर्षी अमावस्या,
7	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अमावस्या	12:50	स्नान-दान हेतु उत्तम मार्गशीर्षी अमावस्या,
8	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकम	14:00	-

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूल्य मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> **Shop Online** | **Order Now**

2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
02	प्रातः 06:04 से 03 डिस. रात 03:01 तक	05	प्रातः 03:35 से 07 डिस. प्रातः 04:36 तक
विघ्नकारक भद्रा			
02	दोपहर 02:00 तक (पाताल)	05	दोपहर 12:02 से रात 12:04 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- ❖ सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach …………………………………	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach …………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ………………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach ……………………	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach …………………………………	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………………………………………	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……………………………………	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……………	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ………………………………	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………………………………………	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………………………………	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ………………………………	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ……………………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……………………………	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………………………………	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………………	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach …………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……………	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ………………………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ………………………………………	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………………	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ………………………	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………………	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……………………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach …………………………	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach …………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ………………………….	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ………………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach …………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach …………………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach …………………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach …………………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ………………………………	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach …………………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……………………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ………………………………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach …………………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ………………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ………………………………..	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……………………………..	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ………………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………..	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ………………………………..	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच **Vani Prushti Vardhak Kawach**	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच **Kamana Poorti Kawach**	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच **Virodh Nashan Kawach**	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच **Siddha Surya Kawach**	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच **Siddha Chandra Kawach**	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) **Siddha Mangal Kawach (Kuja)**	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच **Siddha Bhudh Kawach**	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच **Siddha Guru Kawach**	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
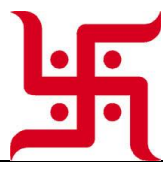
Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
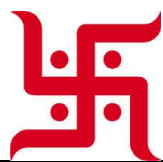
GURUTVA KARYALAY
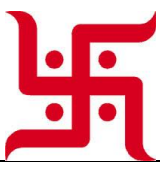
	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..
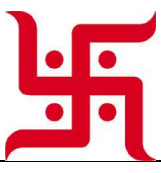
सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
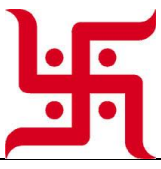
GURUTVA JYOTISH

Weekly

2-Dec to 8-Dec 2018